



NAKSHATRA - VATIKA IN BHARTIYA GYAN PARAMPARA

by **Dr. Mrityunjaya Tiwari**

www.mahakalastroscience.com



विषय - प्रस्तावित नक्षत्र वाटिका निर्माण के संदर्भ में

विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से भारतीय सनातन संस्कृति अन्यतम है, जिस में पर्यावरण को देवता के स्थान दिया गया है। यही कारण है कि पर्यावरण के सभी अंगों जैसे - जल, वायु, भूमि आदि को देवताओं से जोड़ा गया है, अथवा यूँ कहें कि देवता ही माना गया है। भारतीय दर्शन के मूल इकाई जीव में मनुष्य में पंच तत्वों का समावेश माना गया है। मनुष्य पांच तत्वों जल, अग्नि, आकाश, पृथ्वी और वायु से मिलकर बना है, तथा इसे ही पर्यावरण का नाम दिया गया है। वैदिक काल से इन तत्वों को ही देवता मानकर इनकी रक्षा का करने का निर्देश मिलता है, इसलिए वेदों के अंग ज्योतिषशास्त्र में तो ज्योतिष के मूल आधार नक्षत्र, राशि और ग्रहों को भी पर्यावरण के इन अंगों को (भूमि-जल-अग्नि-आकाश-वायु) जोड़ा गया है तथा सभी प्रकार के कष्टों के निवारण हेतु इनके धारण पूजन का विधान भी बताया गया है।

यह तो हम सभी जानते हैं कि हमारा पर्यावरण जितना अधिक शुद्ध होगा उतना ही हमारा जीवन भी सुरक्षित रहेगा इसी लिए हमें अपनी प्रकृति के आवरण को किस प्रकार से सुरक्षित करना है, पर्यावरण प्रदूषण वर्तमान में बहुत ही बड़ी चुनौती के रूप में हमारे सामने सुरसा के सामान मुंह फैलाई समस्या उभर रही है । धीरे-धीरे बढ़ती हुई वैश्विक उष्णता की वजह से आज सही समय पर सही ऋतुओं के ज्ञान भी समस्या होती है, कभी भी वर्षा का आगमन तो कभी शीत कभी गर्मी का अनुभव हम करने लगे है ऐसा नहीं है कि इसके निवारण के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया है, आज विश्व के किसी भी संस्था से स्नातक की पढ़ाई में एक विषय आवश्यक रूप से पर्यावरण विज्ञान का पढ़ाया जाने लगा है, परन्तु क्या पर्यावरण को बचाने की जिम्मेदारी किसी एक की है ? नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं है, क्योंकि पूरे संसार में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो ज्ञानवान है अन्यथा पशुओं में और मनुष्यों में कोई अंतर विशेष नहीं है।

ज्योतिषशास्त्र में यदि ग्रह यात्री है तो पर्यावरण उसका वाहन है पर्यावरण का सीधा संबंध प्रकृति से है, अपने परिवेश में हम तरह-तरह के जीव जंतु पेड़ पौधे तथा अन्य सजीव निर्जीव वस्तुएं पाते हैं, या सब मिलकर के ही तो पर्यावरण की रचना करते हैं प्रकृति और पर्यावरण तो वेद से अभिन्न संबंध रखते हैं अतः पर्यावरण स्वयं में ज्योतिष से भिन्न नहीं है और ज्योतिष के प्रकाश में इसे सुरक्षित रखा जा सकता है जिससे जल जंगल जमीन जानवर वायु आकाश मिलकर दृष्टिकोण नियमित व सुचारू संचारित कर सकें।

सारे ग्रहों नक्षत्रों की रश्मियाँ इस बात की पुष्टि करती हैं कि ज्योतिष व पर्यावरण का पूर्ण संबंध है, आकाश में भ्रमण करने वाले ग्रहों का प्रभाव पर्यावरण में जड़ चेतन पर भी पड़ता है। वनस्पतियों पर यदि ध्यान दिया जाए तो चंद्र चंद्रोदय होते ही कुमुदनी पुष्पित होती है तथा कमल संकुचित होता है सूर्योदय होने पर कमल पुष्पित होता है और कुमुदिनी संकुचित होती है। प्रकृति के नियमों को हम ज्योतिष के अनुसार क्या योगदान देकर सुरक्षित कर सकते हैं? इसपर विचार करना अत्यावश्यक है।

ज्योतिषशास्त्र को दैवीय विद्या के अंतर्गत माना गया है, इसका ज्योतिषी की भूमिका से प्रकृति और ग्रहों-राशियों को जानने की कोशिश से तो बरसों से होती आ रही है आज आवश्यकता है कि इसके साथ-साथ पृथ्वी और इसके आवरण को बचाने की कोशिशें भी तेज की जाए। देश धर्म और जातिगत दीवारों से परे यह ऐसा मुद्दा है जिस पर पूरी दुनिया के लोगों का एक होना होगा पर्यावरण संरक्षण सिर्फ भाषणों फिल्मों किरदारों और लेखों से ही नहीं हो सकता है बल्कि हर व्यक्ति को धरती के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। तभी कुछ ज्योतिष के द्वारा किसी जातक वृक्षारोपण पर बढ़ावा दे सकते हैं पर्यावरण बचा सकते हैं, ग्रहों के अनुसार लगाएं जैसे शनि दूषित हो तो शमी का वृक्ष लगवाए।

पराशर मुनि अपने ग्रन्थ बृहत्पराशर-होराशास्त्र में लिखते हैं –

अर्कः पलाशः खदिरः अपमार्गास्तु पिप्पलः ।
उदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्चैते समिधः क्रमात् ॥

इसके अतिरिक्त शारदातिलक में नक्षत्रों के वृक्षों की विशद चर्चा की गयी है, जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की स्वयं की अलग व्यक्तित्व अथवा विशेषता होती है, ठीक उसी प्रकार आकाश में स्थित ग्रहों राशियों अथवा नक्षत्रों का ही गुण धर्म लेकर इन वृक्षों की कल्पना भूमि में किया गया है जैसे –

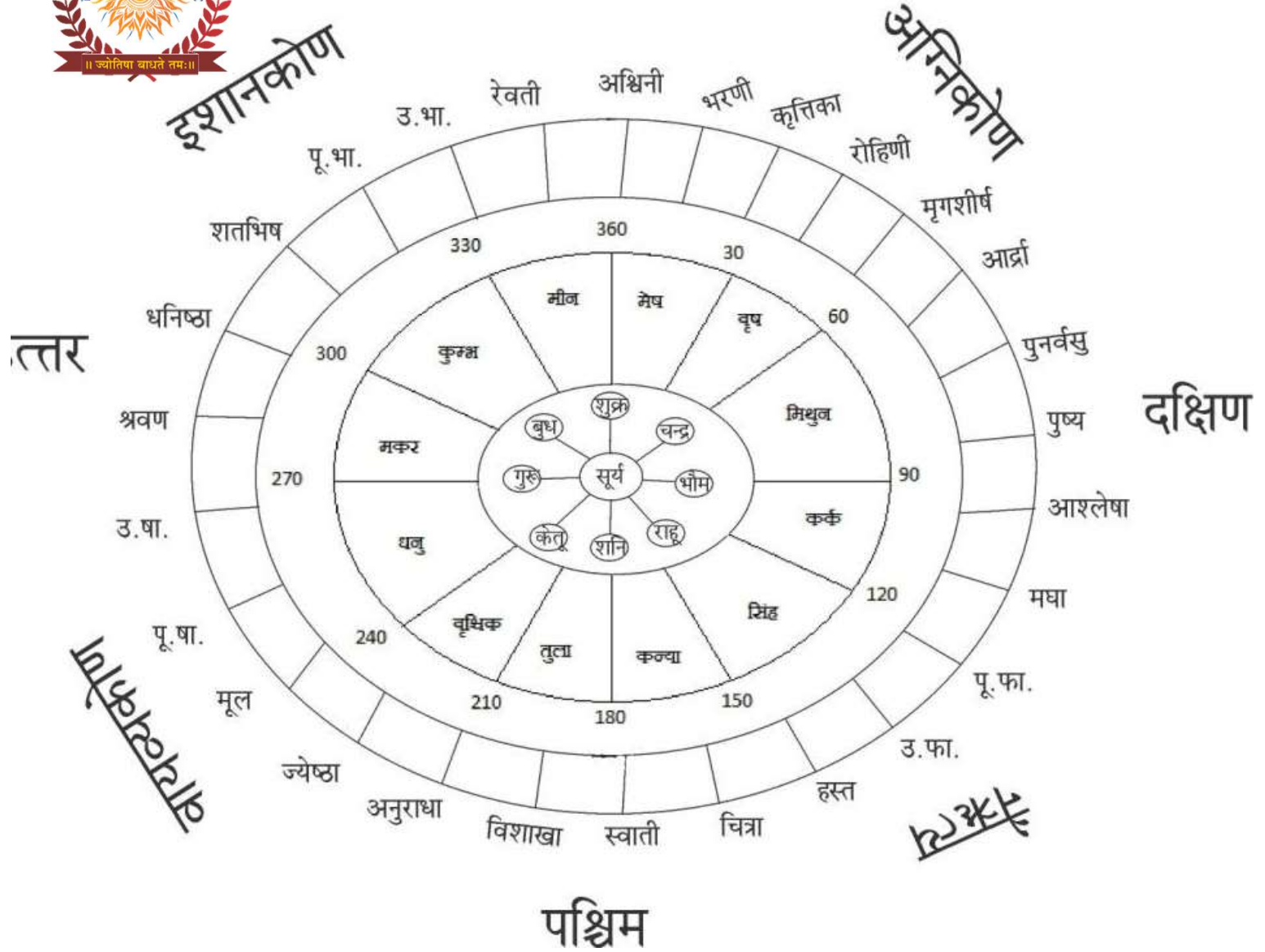
कारस्करोऽथधात्री स्यादुदुम्बरतरुः पुनः।
जम्बूखदिर कृष्णाख्यौ वंशपिप्पल संज्ञकौ॥
नागरोहिणनामानौ पलाशप्लक्षसंज्ञकौ।
अम्बष्ठविल्वार्णुनाख्या विकङ्कतमहीरुहाः॥
वकुलः सरलः सर्जो वंजुलः नपसार्ककौ।
शमीकदम्बनिम्बाभ्रमधूका रिक्षशारिवनः॥

जब हम भारतीय ज्योतिष ग्रंथों व आयुर्वेदिक ग्रंथों का अध्ययन करेंगे तो इनके अनुसार ग्रहों व नक्षत्रों से संबंधित पौधों का रोपण व पूजन करने से मानव का कल्याण होता बताया गया है। आम लोगों को इन वृक्षों के वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, ज्योतिषीय व आयुर्वेदिक महत्व के बारे में समझ होना चाहिए, जिससे प्रकृति पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिले। नक्षत्र वाटिका में लगाए गए अन्य पेड़ पौधे मौलश्री, कटहल, आम, नीम, चिचिड़ा, खैर, गूलर, बेल आदि पौधे विभिन्न प्रकार सकारात्मक ऊर्जा के साथ ही साथ अतिसार, रक्त विकार, पीलिया, त्वचा रोग आदि रोगों में लाभकारी औषधि के रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं।

॥ ज्योतिषा बाधते तमः ॥



पूर्व



उपरोक्त चित्र तथा विषयक आधार पर हमारे परिसर में नक्षत्र वाटिका निर्माण हेतु प्रस्तावित किया जाता है। इस प्रस्तावित नक्षत्र वाटिका निर्माण हेतु निम्नलिखित प्रावधानों का व्यवस्था करना आवश्यक है-

केंद्र का गोला 1 मीटर का व्यास विशिष्ट होगा, जिसके अन्दर श्वेत आक लगाया जाएगा। केंद्र से दूसरा गोल 8.5 मीटर की दूरी पर होगा जिसको 8 भागों में बांटकर पलाश, खदिर, अपामार्ग, पिप्पल, गूलर, शमी, दूर्वा एवं कुशा लगाया जाना है। प्रत्येक वृक्ष के कौणिक दूरी 45^0 अंशों की होगी। तीसरा गोला केंद्र से 17.5 मीटर की दूरी पर होगा जिसमें 12 राशियों के अनुसार निम्नलिखित वृक्षों को लगाया जायेगा। प्रत्येक वृक्ष के कौणिक दूरी 30^0 अंशों की होगी।

उपरोक्त चित्र तथा विषयक आधार पर हमारे परिसर में नक्षत्र वाटिका निर्माण हेतु प्रस्तावित किया जाता है। इस प्रस्तावित नक्षत्र वाटिका निर्माण हेतु निम्नलिखित प्रावधानों का व्यवस्था करना आवश्यक है-
केंद्र का गोला 1 मीटर का व्यास विशिष्ट होगा, जिसके अन्दर श्वेत आक लगाया जाएगा। केंद्र से दुसरा गोल **8.5 मीटर की दूरी पर होगा जिसको 8 भागो में बांटकर** पलाश, खदिर, अपामार्ग, पिप्पल, गूलर, शमी, दूर्वा एवं कुशा लगाया जाना है। प्रत्येक वृक्ष के कौणिक दुरी 45^0 अंशो की होगी। तीसरा गोला केंद्र से 17.5 मीटर की दुरी पर होगा जिसमे 12 राशियों के अनुसार निम्नलिखित वृक्षों को लगाया जायेगा। प्रत्येक वृक्ष के कौणिक दुरी 30^0 अंशो की होगी। केंद्र से चौथा तथा अंतिम गोला 27 मीटर की दुरी पर बनाया जाए, जिसमें 27 नक्षत्रों के वृक्ष लगाये जायेंगे। प्रत्येक वृक्ष के कौणिक दुरी $13^0 20'$ अंशो की होगी। प्रत्येक गोले के अन्दर में पौधे लगाने हेतु दो मीटर व्यास विशिष्ट गोला छोड़ना है शेष जगह में पठन-पाठन हेतु चबूतरे का निर्माण किया जाना है। पूरे चबूतरे की चुनाई ईंट की बनावट के ऊपर होना आवश्यक है। अतः निवेदन है की इस नक्षत्र वाटिका के निर्माण हेतु बनावट को पौधे लगाने से पहले उपरोक्त माप के अनुसार

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहू	केतू
समिध	आक	पलाश	खदिर	अपामार्ग	पिप्पल	गूलर	शमी	दूर्वा	कुशा

राशियां	वृक्ष	राशियां	वृक्ष
१ मेष	आवला	७ तुला	अजरून
२ वृषभ	जम्बू	८ वृश्चिक	भालसरिक
३ मिथुन	शीशम	९ धनु	जलवेतस
४ कर्क	नागकेशर	१० मकर	आक
५ सिंह	पलाश	११ कुंभ	कदम्ब
६ कन्या	अरिट्ट	१२ मीन	नीम

॥ ज्योतिषा बाधते तमः ॥

नक्षत्रनाम	वृक्षनाम	नक्षत्रनाम	वृक्षनाम
१ अश्विनी	कोचिला	१५ स्वाती	अजरून या अर्जुन
२ भरणी	धात्री, आवला	१६ विशाखा	कटिक विकंकट
३ कृत्तिका	गूलर	१७ अनुराधा	वकुल, मौलश्री
४ रोहिणी	जामुन	१८ ज्येष्ठा	सरल, चीड़
५ मृगशीर्षः	खदिर	१९ मूलः	सर्ज या शाल
६ अर्द्रा	शीशम	२० पूर्वाषाढा	वंजुल या जलवंत
७ पुनर्वसुः	वंशवृक्ष	२१ उत्तराषाढा	कटहल
८ पुष्यः	पिप्पल	२२ श्रवण	आक
९ आश्लेषा	नागकेशर	२३ धनिष्ठा	शमी
१० मघा	रोहिण वा वटवृक्ष	२४ शतभषि	कदंब
११ पूर्वाफाल्गुनी	पलाश	२५ पूर्वाभाद्रपदा	आम्रवृक्ष
१२ उत्तराफाल्गुनी	पाकड़	२६ उत्तराभाद्रपदा	नीम
१३ हस्त	अम्बष्ठ वा रीठा	२७ रेवती	महुआ
१४ चित्रा	बेलवृक्ष		



धन्यवाद

www.mahakalastroscience.com

+91 – 8866774099

Dr. M. K. Tiwari